لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا

तुम ख़र्च करोगे	और जो	तुम मुहब्बत रखते हो	उस से जो	तुम ख़र्च करो	जब तक	नेकी	तुम हरगिज़ न पहुँचोगे

مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٩٢﴾ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا

हलाल	थे	खाने	तमाम	92	जानने वाला	उस को	तो बेशक अल्लाह	से (कोई) चीज़

لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ

कि	क़ब्ल	से	अपनी जान	पर	इस्राईल (याकूब अ)	जो हराम कर लिया	मगर	बनी इस्राईल के लिए

تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	फिर उस को पढ़ो	तौरेत	सो तुम लाओ	आप कह दें	तौरेत	नाज़िल की जाए (उतरे)

صٰدِقِيْنَ ﴿٩٣﴾ فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ

इस	से - बाद	झूट	अल्लाह पर	झूट बाँधे	फिर जो	93	सच्चे

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٩٤﴾ قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۗ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	दीन	पस पैरवी करो	अल्लाह ने सच फ़रमाया	आप कह दें	94	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग

حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٥﴾ اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ

लोगों के लिए	मुक़र्रर किया गया	घर	पहला	बेशक	95	मुशरिक (जमा)	से	थे	और न	हनीफ़

لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٦﴾ فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ

मुक़ामे	खुली	निशानियां	उस में	96	तमाम जहानों के लिए	और हिदायत	बरकत वाला	मक्का में	जो

اِبْرٰهِيْمَ ۬ۚ وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ

ख़ानाए कअ़्बा का हज करना	लोग	पर	और अल्लाह के लिए	अम्न में	हो गया	दाख़िल हुआ उस में	और जो	इब्राहीम

مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ

से	बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	कुफ़्र किया	और जो- जिस	राह	उस की तरफ़	इस्तिताअ़त रखता हो	जो

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٧﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	अल्लाह की आयतों से	तुम कुफ़्र करते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	कह दें	97	जहान वाले

شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٨﴾ قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ

से	क्यों रोकते हो?	ऐ अहले किताब	कह दें	98	जो तुम करते हो	पर	गवाह

سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّاَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ

अल्लाह	और नहीं	गवाह (जमा)	और तुम खुद	कजी	तुम ढूंडते हो उस में	ईमान लाए	जो	अल्लाह का रास्ता

بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا

एक गिरोह	तुम कहा मानोगे	अगर	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ	99	तुम करते हो	से-जो	बेख़बर

مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100	हालते कुफ़्र	तुम्हारे ईमान	बाद	वह फेर देंगे तुम्हें	दी गई किताब	वह लोग जो	से

وقف جبريل عليه السلام

तुम हरगिज़ नेकी को न पहुँचोगे जब तक उस में से ख़र्च न करो जिस से तुम मुहब्बत रखते हो, और जो तुम ख़र्च करोगे कोई चीज़ तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (92)

तमाम खाने हलाल थे बनी इस्राईल के लिए, मगर जो याकूब (अ) ने अपने आप पर हराम कर लिया था उस से क़ब्ल कि तौरेत उतरे, आप कह दें कि तुम तौरेत लाओ, फिर उस को पढ़ो अगर तुम सच्चे हो। (93)

फिर जो कोई अल्लाह पर इस के बाद झूट बाँधे तो वही लोग ज़ालिम हैं। (94)

आप कह दें अल्लाह ने सच फ़रमाया, पस तुम इब्राहीम हनीफ़ (एक के हो जाने वाले) के दीन की पैरवी करो और वह मुशरिकों में से न थे। (95)

बेशक सब से पहले जो घर मुक़र्रर किया गया लोगों के लिए वह जो मक्का में है बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत। (96)

उस में निशानियां हैं खुली (जैसे) मुक़ामे इब्राहीम (अ), और जो उस में दाख़िल हुआ वह अम्न में हो गया, और अल्लाह के लिए (अल्लाह का हक़ है) लोगों पर ख़ानाए कअ़्बा का हज करना जो उस की तरफ़ राह (चलने की) इस्तिताअ़त रखता हो, और जिस ने कुफ़्र किया तो बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज़ है। (97)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! क्यों तुम अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हो? और अल्लाह उस पर गवाह है (बाख़बर है) जो तुम करते हो। (98)

आप (स) कह दें: ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो (उस को) जो अल्लाह पर ईमान लाए, तुम उस में कजी ढूंडते हो, और तुम खुद गवाह हो, और अल्लाह उस से बेख़बर नहीं जो तुम करते हो। (99)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो!) अगर कहा मानोगे उन लोगों के एक फ़रीक़ का जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें (हालते) कुफ़्र में फेर देंगे। (100)

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ

उस का रसूल	और तुम्हारे दरमियान	अल्लाह की आयतें	तुम पर	पढ़ी जाती हैं	जबकि तुम	तुम कुफ़्र करते हो	और कैसे

وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٠١﴾ ع ١٠ ١

101	सीधा रास्ता	तरफ़	तो उसे हिदायत दी गई	अल्लाह को	मज़बूत पकड़ेगा	और जो

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ

और तुम	मगर	और तुम हरगिज़ न मरना	उस से डरना	हक़	तुम डरो अल्लाह से	ईमान लाए	वह जो कि	ऐ

مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٢﴾ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ۠ وَاذْكُرُوْا

और याद करो	आपस में फूट डालो	और न	सब मिल कर	अल्लाह की रस्सी को	और मज़बूती से पकड़ लो	102	मुसलमान (जमा)

نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ

तो तुम हो गए	तुम्हारे दिलों में	तो उल्फ़त डाल दी	दुश्मन (जमा)	जब तुम थे	तुम पर	अल्लाह की नेमत

بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ

तो तुम्हें बचा लिया	आग	से (के)	गढ़ा	किनारा	पर	और तुम थे	भाई भाई	उस के फ़ज़्ल से

مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ وَلْتَكُنْ

और चाहिए रहे	103	हिदायत पाओ	ताकि तुम	अपनी आयात	तुम्हारे लिए	वाज़ेह करता है अल्लाह	इसी तरह	उस से

مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ

और वह रोके	अच्छे कामों का	और वह हुक्म दे	भलाई	तरफ़	वह बुलाए	एक जमाअ़त	तुम से (में)

عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ

उन की तरह जो	और न हो जाओ	104	कामयाब होने वाले	वह	और यही लोग	बुराई से

تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	और यही लोग	वाज़ेह हुक्म	उन के पास आगए	कि	उस के बाद	और बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे	मुतफ़र्रिक़ हो गए

عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٠٥﴾ يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ

बाज़ चेहरे	और सियाह होंगे	बाज़ चेहरे	सफ़ेद होंगे	दिन	105	बड़ा	अ़ज़ाब

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۫ اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ

अपने ईमान	बाद	क्या तुम ने कुफ़्र किया	उन के चेहरे	सियाह हुए	लोग	पस जो

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ

उन के चेहरे	सफ़ेद होंगे	वह लोग जो	और अलबत्ता	106	कुफ़्र करते	तुम थे	क्यों कि	अ़ज़ाब	तो चखो

فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात	यह	107	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	अल्लाह की रहमत	सो - में

نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾

108	जहान वालों के लिए	कोई ज़ुल्म	चाहता	और नहीं अल्लाह	ठीक ठीक	आप (स) पर	हम पढ़ते हैं वह

और तुम कैसे कुफ़्र करते हो जबकि तुम पर अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम्हारे दरमियान उस का रसूल (स) मौजूद है, और जो कोई मज़बूती से पकड़ेगा अल्लाह (की रस्सी) को तो उसे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी गई। (101)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (ऐ ईमान वालो)! अल्लाह से डरो जैसा कि उस से डरने का हक़ है और तुम हरगिज़ न मरना मगर (उस हाल में) कि तुम मुसलमान हो। (102)

और मज़बूती से पकड़ लो अल्लाह की रस्सी को सब मिल कर और आपस में फूट न डालो, और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त डाल दी तो तुम उस के फ़ज़्ल से भाई भाई हो गए, और तुम आग के गढ़े के किनारे पर थे तो उस ने तुम्हें उस से बचा लिया, इसी तरह वह तुम्हारे लिए अपनी आयात वाज़ेह करता है ताकि तुम हिदायत पाओ। (103)

और चाहिए कि तुम में से एक जमाअ़त रहे, वह भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छे कामों का हुक्म दे और बुराई से रोके, और यही लोग कामयाब होने वाले हैं। (104)

और उन लोगों की तरह न हो जाओ जो मुतफ़र्रिक़ हो गए और बाहम इख़्तिलाफ़ करने लगे उस के बाद कि उन के पास वाज़ेह हुक्म आगए, और यही लोग हैं जिन के लिए है अ़ज़ाब बहुत बड़ा। (105)

जिस दिन बाज़ चेहरे सफ़ेद होंगे और बाज़ चेहरे सियाह होंगे, पस जिन लोगों के सियाह हुए चेहरे (उन से कहा जाएगा) क्या तुम ने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया? तो अब अ़ज़ाब चखो क्यों कि तुम कुफ़्र करते थे। (106)

और अलबत्ता जिन लोगों के चेहरे सफ़ेद होंगे वह अल्लाह की रहमत में होंगे, वह उस में हमेशा रहेंगे। (107)

यह अल्लाह की आयात हैं, हम आप पर ठीक ठीक पढ़ते हैं, और अल्लाह जहान वालों पर कोई ज़ुल्म नहीं चाहता। (108)

ع ١١ ٨ ٢

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾

109	तमाम काम	लौटाए जाएंगे	और अल्लाह की तरफ़	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

अच्छे कामों का	तुम हुक्म करते हो	लोगों के लिए	भेजी गई	उम्मत	बेहतरीन	तुम हो

وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ اٰمَنَ

ईमान ले आते	और अगर	अल्लाह पर	और ईमान लाते हो	बुरे काम	से	और मना करते हो

اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ

और उन के अक्सर	ईमान वाले	उन से	उन के लिए	बेहतर	तो था	अहले किताब

الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾ لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۟ قف

पीठ (जमा)	वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे	वह तुम से लड़ेंगे	और अगर	सताना	सिवाए	बिगाड़ सकेंगे तुम्हारा	हरगिज़ न	110	नाफ़रमान

ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا

जहां कहीं	ज़िल्लत	उन पर	चस्पां कर दी गई	111	उन की मदद न होगी	फिर

ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ

ग़ज़ब के साथ	वह लौटे	लोगों से	और उस (अ़हद)	अल्लाह से	उस (अ़हद)	सिवाए	वह पाए जाएं

مِّنَ اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا

थे	इस लिए कि वह	यह	मोहताजी	उन पर	और चस्पां कर दी गई	अल्लाह से (के)

يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ ذٰلِكَ

यह	नाहक़	नबी (जमा)	और क़त्ल करते थे	अल्लाह की आयतें से	कुफ़्र करते

بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾ لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ

से (में)	बराबर	नहीं	112	हद से बढ़ जाते	और थे	उन्हों ने नाफ़रमानी की	इस लिए

اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ

रात के औक़ात	अल्लाह की आयात	वह पढ़ते हैं	क़ाइम	एक जमाअ़त	अहले किताब

وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

आख़िरत	और दिन	अल्लाह पर	ईमान रखते हैं	113	सिजदा करते हैं	और वह

وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ

और वह दौड़ते हैं	बुरे काम	से	और मना करते हैं	अच्छी बात का	और हुक्म करते हैं

فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوْا

वह करेंगे	और जो	114	नेकोकार (जमा)	से	और यही लोग	नेक काम	में

مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿١١٥﴾

115	परहेज़गारों को	जानने वाला	और अल्लाह	तो हरगिज़ नाक़द्री न होगी उस की	नेकी	से (कोई)

और अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और तमाम काम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (109)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए भेजी गई (पैदा की गई) तुम अच्छे कामों का हुक्म करते हो और बुरे कामों से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो, और अगर अहले किताब ईमान ले आते तो उन के लिए बेहतर था, उन में (कुछ) ईमान वाले हैं और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (110)

वह सताने के सिवा तुम्हारा हरगिज़ कुछ न बिगाड़ सकेंगे, और अगर वह तुम से लड़ेंगे तो वह तुम्हें पीठ दिखाएंगे, फिर उन की मदद न होगी, (111)

उन पर ज़िल्लत चस्पां कर दी गई जहां कहीं वह पाए जाएं सिवाए उस के कि अल्लाह के अ़हद में आ जाएं और लोगों के अ़हद में, वह लौटे अल्लाह के ग़ज़ब के साथ और उन पर चस्पां कर दी गई मोहताजी, यह इस लिए कि वह अल्लाह की आयात का इन्कार करते थे और नबियों को नाहक़ क़त्ल करते थे, यह इस लिए (था) कि उन्हों ने नाफ़रमानी की और वह हद से बढ़ जाते थे। (112)

अहले किताब में सब बराबर नहीं, एक जमाअ़त (सीधी राह पर) क़ाइम है और रात के औक़ात में अल्लाह की आयात पढ़ते हैं और वह सिजदा करते हैं। (113)

वह ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और वह अच्छी बात का हुक्म करते हैं और बुरे काम से रोकते हैं और वह नेक कामों में दौड़ते हैं, और यही लोग नेकोकारों में से हैं। (114)

और वह जो करेंगे कोई नेकी तो हरगिज़ उस की नाक़द्री न होगी, और अल्लाह परहेज़गारों को जानने वाला है। (115)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُم

उन की औलाद	और न	उन के माल	उन से (के)	हरगिज़ काम न आएगा	कुफ़्र किया	वह लोग जो	बेशक

مِّنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾

116	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	आग (दोज़ख़) वाले	और यही लोग	कुछ	अल्लाह से (के आगे)

مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِي هَٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ

हवा	ऐसी - जैसे	दुनिया	ज़िन्दगी	इस	में	ख़र्च करते हैं	जो	मिसाल

فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا

और नहीं	फिर उस को हलाक कर दे	जानें अपनी	उन्हों ने ज़ुल्म किया	क़ौम	खेती	वह जा लगे	पाला	उस में

ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَٰكِنْ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

जो ईमान लाए (ईमान वालो)	ऐ	117	वह ज़ुल्म करते हैं	अपनी जानें	बल्कि	ज़ुल्म किया उन पर अल्लाह

لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا ۖ وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ ۚ

तुम तक्लीफ़ पाओ	कि	वह चाहते हैं	ख़राबी	वह कमी नहीं करते	सिवाए-अपने	से	दोस्त (राज़दार)	न बनाओ

قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۖ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ

बड़ा	उन के सीने	छुपा हुआ	और जो	उन के मुँह	से	दुश्मनी	अलबत्ता ज़ाहिर हो चुकी

قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَا أَنتُمْ أُولَاءِ

वह लोग	सुन लो-तुम	118	अक़्ल रखते	तुम हो	अगर	आयात	तुम्हारे लिए	हम ने खोल कर बयान कर दिया

تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ ۖ وَإِذَا لَقُوكُمْ

वह तुम से मिलते हैं	और जब	सब	किताब पर	और तुम ईमान रखते हो	वह दोस्त रखते हैं तुम्हें	और नहीं	तुम दोस्त रखते हो उन को

قَالُوا آمَنَّا ۖ وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۚ

गुस्से	से	उंगलियां	तुम पर	वह काटते हैं	अकेले होते हैं	और जब	हम ईमान लाए	कहते हैं

قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

119	सीने वाली (दिल की बातें)	जानने वाला	बेशक अल्लाह	अपने गुस्से में	तुम मर जाओ	कह दीजिए

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا ۚ

उस से	वह खुश होते हैं	कोई बुराई	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगती है	कोई भलाई	पहुँचे तुम्हें	अगर

وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۚ

कुछ	उन का फ़रेब	न बिगाड़ सकेगा तुम्हारा	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर

إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾ ع وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ ١٢ ع ١١ ٣

अपने घर	से	आप (स) सुबह सवेरे निकले	और जब	120	घेरे हुए है	वह करते हैं	जो कुछ	बेशक अल्लाह

تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾

121	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	जंग के	ठिकाने	मोमिन (जमा)	बिठाने लगे

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, हरगिज़ अल्लाह के आगे उन के माल और न उन की औलाद कुछ भी काम आएंगे, और यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(116)**

उन की मिसाल जो ख़र्च करते हैं इस दुनिया में ऐसी है जैसे हवा हो, उस में पाला हो, वह जा लगे खेती को उस क़ौम की जिन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया, फिर उस को तबाह कर दे, अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वह अपनी जानों पर खुद ज़ुल्म करते हैं। **(117)**

ऐ ईमान वालो! अपनों के सिवा किसी को राज़दार न बनाओ, वह तुम्हारी ख़राबी में कमी नहीं करते, वह चाहते हैं कि तुम तक्लीफ़ पाओ, (उन की) दुश्मनी ज़ाहिर हो चुकी है उन के मुँह से, और जो उन के सीनों में छुपा हुआ है वह (उस से भी) बड़ा है, हम ने तुम्हारे लिए आयात खोल कर बयान कर दी हैं अगर तुम अक़्ल रखते हो। **(118)**

सुन लो! तुम वह लोग हो जो उन को दोस्त रखते हो और वह तुम्हें दोस्त नहीं रखते और तुम सब किताबों पर ईमान रखते हो, और जब तुम से मिलते हैं तो कहते हैं हम ईमान लाए, और जब अकेले होते हैं तो वह तुम पर गुस्से से उंगलियां चबाते हैं, कह दीजिए! तुम अपने गुस्से में मर जाओ, बेशक अल्लाह दिल की बातों को (खूब) जानने वाला है। **(119)**

अगर तुम्हें कोई भलाई पहुँचे तो उन्हें बुरी लगती है, और अगर तुम्हें कोई बुराई पहुँचे तो वह उस से खुश होते हैं, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, तुम्हारा न बिगाड़ सकेगा उन का फ़रेब कुछ भी, बेशक जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसे घेरे हुए है। **(120)**

और जब आप सुबह सवेरे निकले अपने घर से, मोमिनों को जंग के मोर्चों पर बिठाने लगे, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। **(121)**

اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۭ وَعَلَى اللّٰهِ

और अल्लाह पर	उनका मददगार	और अल्लाह	हिम्मत हार दें	कि	तुम से	दो गिरोह	इरादा किया	जब

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ ۚ

कमज़ोर	जबकि तुम	बद्र में	मदद कर चुका तुम्हारी अल्लाह	और अलबत्ता	122	मोमिन	चाहिए भरोसा करें

فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिनों को	जब आप कहने लगे	123	शुक्रगुज़ार हो	ताकि तुम	तो डरो अल्लाह से

اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ

फ़रिश्ते	से	तीन हज़ार से	तुम्हारा रब	मदद करे तुम्हारी	कि	क्या काफ़ी नहीं तुम्हारे लिए

مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ

फ़ौरन-वह	से	और तुम पर आएं	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	अगर	क्यों नहीं	124	उतारे हुए

هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125	निशान ज़दा	फ़रिश्ते	से	पाँच हज़ार	तुम्हारा रब	मदद करेगा तुम्हारी	यह

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ۭ

उस से	तुम्हारे दिल	और इस लिए कि इत्मीनान हो	तुम्हारे लिए	ख़ुशख़बरी	मगर (सिर्फ़)	उस को बनाया अल्लाह ने	और नहीं

وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾ لِيَقْطَعَ طَرَفًا

गिरोह	ताकि काट डाले	126	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह के पास	से	मगर (सिवाए)	मदद	और नहीं

مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ ﴿١٢٧﴾ لَيْسَ لَكَ

नहीं - आप (स) के लिए	127	नामुराद	तो वह लौट जाएं	उन्हें ज़लील करे	या	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	से

مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128	ज़ालिम (जमा)	क्यों कि वह	उन्हें अज़ाब दे	या	उन की	ख़ाह तौबा कुबूल कर ले	कुछ	काम (दख़्ल)	से

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ

चाहे	जिस को	वह बख़्श दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	और अल्लाह के लिए जो

ع ١٣ ٩ ٤ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

जो	ऐ	129	मेह्रबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	चाहे	जिस	और अज़ाब दे

اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۠ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ

और डरो अल्लाह से	दुगना हुआ (चौगना)	दुगना	सूद	न खाओ	ईमान लाए (ईमान वाले)

لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٣٠﴾ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ

तैयार की गई	जो कि	आग	और डरो	130	फ़लाह पाओ	ताकि तुम

لِلْكٰفِرِيْنَ ﴿١٣١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

132	रहम किया जाए	ताकि तुम पर	और रसूल	अल्लाह	और हुक्म मानो तुम	131	काफ़िरों के लिए

जब तुम में से दो गिरोहों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें, और अल्लाह उन का मददगार था, और अल्लाह पर चाहिए कि मोमिन भरोसा करें। (122)

और अलबत्ता अल्लाह तुम्हारी बद्र में मदद कर चुका है जबकि तुम कमज़ोर (समझे जाते) थे, तो अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो। (123)

जब आप मोमिनों को कहते थे क्या तुम्हारे लिए यह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़रिश्तों से उतारे हुए। (124)

क्यों नहीं अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो, और वह (दुश्मन) तुम पर चढ़ आएं तो फ़ौरन तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करेगा पाँच हज़ार निशान ज़दा फ़रिश्तों से। (125)

और यह अल्लाह ने सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशख़बरी के लिए किया और इस लिए कि उस से तुम्हारे दिलों को इत्मीनान हो, और नहीं मदद मगर (सिर्फ़) अल्लाह के पास से है जो ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (126)

ताकि वह उन लोगों के एक गिरोह को काट डाले जिन्हों ने कुफ़्र किया या उन्हें ज़लील कर दे तो वह नामुराद लौट जाएं। (127)

आप (स) का इस में दख़्ल नहीं कुछ भी, ख़ाह (अल्लाह) उन की तौबा कुबूल करे या उन्हें अज़ाब दे क्यों कि वह ज़ालिम हैं। (128)

और अल्लाह ही के लिए है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और जिस को चाहे बख़्श दे और अज़ाब दे जिस को चाहे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है। (129)

ईमान वालो! न खाओ सूद दुगना चौगना, और अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (130)

और डरो उस आग से जो काफ़िरों के लिए तैयार की गई है। (131)

और तुम अल्लाह और रसूल (स) का हुक्म मानो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (132)

وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ

और दौड़ो	तरफ़	से	बख़्शिश	अपना रब	और जन्नत	उस का अर्ज़	आस्मान (जमा)

وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٣﴾ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّآءِ

और ज़मीन	तैयार की गई	परहेज़गारों के लिए	133	जो लोग	ख़र्च करते हैं	ख़ुशी में

وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ

और तक्लीफ़	और पी जाते हैं	ग़ुस्सा	और माफ़ करते हैं	से	लोग

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣٤﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا

और अल्लाह	दोस्त रखता है	एहसान करने वाले	134	और वह लोग जो	जब	वह करें	कोई बेहयाई	या	ज़ुल्म करें

اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۗ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ

अपने तईं	वह अल्लाह को याद करें	फिर बख़्शिश मांगें	अपने गुनाहों के लिए	और कौन	बख़्शता है	गुनाह

اِلَّا اللّٰهُ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٥﴾

अल्लाह के सिवा	और न	वह अड़ें	पर	जो	उन्हों ने किया	और वह	जानते हैं	135

اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ

यही लोग	उन की जज़ा	बख़्शिश	से	उन का रब	और बाग़ात

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ

बहती हैं	से	उस के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उस में	और कैसा अच्छा

اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ فَسِيْرُوْا

बदला	काम करने वाले	136	गुज़र चुके	तुम से पहले	तरीक़े (वाक़िआत)	तो चलो फिरो

فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٣٧﴾

ज़मीन में	फिर देखो	कैसा	हुआ	अन्जाम	झुटलाने वालों	137

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٣٨﴾

यह	बयान	लोगों के लिए	और हिदायत	और नसीहत	परहेज़गारों के लिए	138

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٩﴾

और सुस्त न पड़ो	और ग़म न खाओ	और तुम	ग़ालिब	अगर तुम हो	ईमान वाले	139

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ

अगर	तुम्हें पहुँचा	ज़ख़्म	तो अलबत्ता	पहुँचा	क़ौम	ज़ख़्म	उस जैसा	और यह	अय्याम

نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

हम बारी बारी बदलते हैं इस को	लोगों के दरमियान	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	जो लोग	ईमान लाए

وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

और बनाए	तुम से	शहीद (जमा)	और अल्लाह	दोस्त नहीं रखता	ज़ालिम (जमा)	140

और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ जिस का अर्ज़ आस्मानों और ज़मीन (के बराबर) है, तैयार की गई है परहेज़गारों के लिए। (133)

जो ख़र्च करते हैं ख़ुशी (ख़ुशहाली) और तक्लीफ़ में और पी जाते हैं ग़ुस्सा और माफ़ कर देते हैं लोगों को, और अल्लाह दोस्त रखता है एहसान करने वालों को। (134)

और वह लोग जो बेहयाई करें या अपने तईं कोई ज़ुल्म कर बैठें तो वह अल्लाह को याद करें, फिर अपने गुनाहों के लिए बख़्शिश मांगें, और कौन गुनाह बख़्शता है अल्लाह के सिवा? और जो उन्हों ने (ग़लत) किया उस पर जानते बूझते न अड़ें। (135)

ऐसे ही लोगों की जज़ा उन के रब की तरफ़ से बख़्शिश और बाग़ात हैं जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, और कैसा अच्छा बदला है काम करने वालों का! (136)

गुज़र चुके हैं तुम से पहले तरीक़े (वाक़िआत) तो ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कैसा अन्जाम हुआ झुटलाने वालों का! (137)

यह बयान है लोगों के लिए और हिदायत और नसीहत परहेज़गारों के लिए। (138)

और तुम सुस्त न पड़ो और ग़म न खाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे अगर तुम ईमान वाले हो। (139)

अगर तुम को ज़ख़्म पहुँचा तो अलबत्ता पहुँचा है उस क़ौम को (भी) उस जैसा ही ज़ख़्म, और यह (ख़ुशी और ग़म के) दिन हैं जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी बदलते रहते हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले उन लोगों को जो ईमान लाए और तुम में से (बाज़ को) शहीद बनाए (दरजए शहादत दे), और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (140)

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤١﴾

141	काफ़िर (जमा)	और मिटा दे	ईमान लाए	जो लोग	और ताकि पाक साफ़ कर दे अल्लाह

اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا

जिहाद करने वाले	जो लोग	अल्लाह ने मालूम किया	और अभी नहीं	जन्नत	तुम दाख़िल होगे	कि	क्या तुम समझते हो?

مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٢﴾ وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ

से	मौत	तुम तमन्ना करते थे	और अलबत्ता	142	सब्र करने वाले	और मालूम किया	तुम में से

ع ١٤ ١٣ ٥
قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿١٤٣﴾

143	देखते हो	और तुम	तो अब तुम ने उसे देख लिया	तुम उस से मिलो	कि	क़ब्ल

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ

रसूल (जमा)	उन से पहले	अलबत्ता गुज़रे	एक रसूल	मगर (तो)	मुहम्मद (स)	और नहीं

اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ

फिर जाए	और जो	अपनी एड़ियों पर	तुम फिर जाओगे	क़त्ल हो जाएं	या	वह वफ़ात पा लें	क्या फिर अगर

عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٤﴾

144	शुक्र करने वाले	और जल्द जज़ा देगा अल्लाह	कुछ भी	तो हरगिज़ न बिगाड़ेगा अल्लाह का	अपनी एड़ियों पर

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ

मुक़र्ररा वक़्त	लिखा हुआ	अल्लाह के हुक्म से	बग़ैर	वह मरे	कि	किसी शख़्स के लिए	और नहीं

وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ وَمَنْ يُّرِدْ

चाहेगा	और जो	उस से	हम देंगे उस को	दुनिया	इनआम	चाहेगा	और जो

ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٤٥﴾

145	शुक्र करने वाले	और हम जल्द जज़ा देंगे	उस से	हम देंगे उस को	आख़िरत	बदला

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا

सुस्त पड़े	पस न	बहुत	अल्लाह वाले	उन के साथ	लड़े	नबी	और बहुत से

لِمَآ اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ

और न दब गए	उन्हों ने कमज़ोरी की	और न	अल्लाह की राह	में	उन्हें पहुँचे	ब सबब-जो

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٤٦﴾ وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ

कि	सिवाए	उन का कहना	और न था	146	सब्र करने वाले	दोस्त रखता है	और अल्लाह

قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِىْٓ اَمْرِنَا

हमारे काम में	और हमारी ज़ियादती	हमारे गुनाह	बख़्शदे हम को	ऐ हमारे रब	उन्हों ने दुआ की

وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٤٧﴾

147	काफ़िर (जमा)	क़ौम	पर	और हमारी मदद फ़रमा	हमारे क़दम	और साबित रख

और ताकि अल्लाह पाक साफ़ कर दे उन लोगों को जो ईमान लाए और मिटा दे काफ़िरों को। (141)

क्या तुम यह समझते हो कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओगे और अभी अल्लाह ने मालूम नहीं किया (इम्तिहान नहीं लिया) कि कौन तुम में से जिहाद करने वाले हैं और सब्र करने वाले हैं। (142)

और अलबत्ता तुम मौत से मिलने से क़ब्ल उस की तमन्ना करते थे, तो अब तुम ने उसे (मौत को) देख लिया और तुम उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हो। (143)

और मुहम्मद (स) तो एक रसूल हैं, अलबत्ता गुज़र चुके हैं उन से पहले बहुत से रसूल, फिर अगर वह वफ़ात पा लें या क़त्ल हो जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) लौट जाओगे? और जो अपनी एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फिर जाए तो वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेगा, और अल्लाह जल्द जज़ा देगा शुक्र करने वालों को। (144)

और किसी शख़्स के लिए (मुमकिन) नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर मर जाए, लिखा हुआ है एक मुक़र्ररा वक़्त, और जो दुनिया का इनआम चाहेगा हम उसे उस में से दे देंगे, और जो चाहेगा आख़िरत का बदला हम उसे उस में से देंगे, और हम शुक्र करने वालों को जल्द जज़ा देंगे। (145)

और बहुत से नबी (हुए हैं) उन के साथ (मिल कर) बहुत से अल्लाह वाले लड़े, पस वह सुस्त न पड़े (उन मुसीबतों) के सबब जो उन्हें अल्लाह की राह में पहुँची और न उन्हों ने कमज़ोरी (ज़ाहिर) की और न दब गए, और अल्लाह सब्र करने वालों को दोस्त रखता है। (146)

और उन का कहना न था उस के सिवाए कि उन्हों ने दुआ की: ऐ हमारे रब! हमें बख़्शदे हमारे गुनाह, और हमारी ज़ियादती हमारे काम में, और साबित रख हमारे क़दम और काफ़िरों की क़ौम पर हमारी मदद फ़रमा। (147)

فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ

तो उन्हें दिया अल्लाह	इनआम	दुनिया	और अच्छा	इनआम-ए-आख़िरत

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا ع ١٥ ٥ ٦

और अल्लाह	दोस्त रखता है	एहसान करने वाले	148	ऐ	लोग जो	ईमान लाए

اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا

अगर तुम कहा मानोगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह तुम्हें फेर देंगे	पर	तुम्हारी एड़ियां	फिर तुम पलट जाओगे

خٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ ﴿١٥٠﴾

घाटे में	149	बल्कि अल्लाह	तुम्हारा मददगार	और वह	बेहतर	मददगार (जमा)	150

سَنُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَاۤ اَشْرَكُوْا

अ़नक़रीब हम डाल देंगे	में	दिल (जमा)	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	रुअ़ब	इस लिए कि उन्हों ने शरीक किया

بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ

अल्लाह का	जिस	नहीं उतारी	उस की	कोई सनद	और उन का ठिकाना	दोज़ख़

وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗۤ

और बुरा	ठिकाना	ज़ालिम (जमा)	151	और अलबत्ता	सच्चा कर दिया तुम से अल्लाह	अपना वादा

اِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰۤى اِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ

जब	तुम क़त्ल करने लगे उन्हें	उस के हुक्म से	यहां तक कि	जब	तुम ने बुज़दिली की	और झगड़ा किया

فِى الْاَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ؕ

काम में	और तुम ने नाफ़रमानी की	उस के बाद	जब तुम्हें दिखाया	जो	तुम चाहते थे

مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ

तुम से	जो चाहता था	दुनिया	और तुम से	जो चाहता था	आख़िरत

ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ؕ

फिर	तुम्हें फेर दिया	उन से	ताकि तुम्हें आज़माए	और तहक़ीक़	माफ़ किया	तुम से (तुम्हें)

وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٢﴾ اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا

और न	तुम चढ़ते थे	जब	152	मोमिन (जमा)	पर	फ़ज़्ल करने वाला	और अल्लाह

تَلْوٗنَ عَلٰۤى اَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِىْۤ اُخْرٰىكُمْ

मुड़ कर देखते थे	किसी को	और रसूल (स)	तुम्हें पुकारते थे	तुम्हारे पीछे से

فَاَثَابَكُمْ غَمًّا ۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ

फिर तुम्हें पहुँचाया	ग़म पर ग़म	ताकि न	तुम रंज करो	पर	जो तुम से निकल गया

وَلَا مَاۤ اَصَابَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥٣﴾

और न	जो	तुम्हें पेश आए	और अल्लाह	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	153

तो अल्लाह ने उन्हें इन्आम दिया दुनिया का और आख़िरत का अच्छा इन्आम, और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है। (148)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहा मानोगे तो वह तुम्हें एड़ियों पर (उलटे पाऊँ) फेर देंगे फिर तुम घाटे में पलट जाओगे। (149)

बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सब से बेहतर मददगार है। (150)

हम अ़नक़रीब काफ़िरों के दिलों में रुअ़ब डाल देंगे इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह का शरीक किया जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी, और उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और बुरा ठिकाना है ज़ालिमों का। (151)

और अलबत्ता अल्लाह ने तुम से अपना वादा सच्चा कर दिखाया जब तुम उन्हें उस के हुक्म से क़त्ल करने लगे यहां तक कि जब तुम ने बुज़दिली की और काम में झगड़ा किया और उस के बाद नाफ़रमानी की जबकि तुम्हें दिखाया जो तुम चाहते थे, तुम में से कोई दुनिया चाहता था और तुम में से कोई आख़िरत चाहता था, फिर उस ने तुम्हें उन से पस्पा कर दिया ताकि तुम्हें आज़माए, और तहक़ीक़ उस ने तुम्हें माफ़ कर दिया, और अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करने वाला है। (152)

जब तुम (मुँह उठा कर) चढ़ते जाते थे और किसी को पीछे मुड़ कर न देखते थे और रसूल (स) तुम्हारे पीछे से तुम्हें पुकारते थे, फिर तुम्हें ग़म पर ग़म पहुँचा ताकि तुम रंज न करो उस पर जो (तुम्हारे हाथ से) निकल गया और न (उस पर) जो तुम्हें पेश आए, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (153)

ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ ۙ

फिर	उस ने उतारा	तुम पर	बाद	ग़म	अम्न	ऊँघ	ढांक लिया	एक जमाअ़त	तुम में से

وَطَآئِفَةٌ قَدْ اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ

और एक जमाअ़त	उन्हें फ़िक्र पड़ी थी	अपनी जानें	वह गुमान करते थे	अल्लाह के बारे में	बे हक़ीक़त

ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ؕ يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ

गुमान	जाहिलियत	वह कहते थे	क्या	हमारे लिए	से	काम	कुछ	आप कह दें	कि	काम

كُلَّهٗ لِلّٰهِ ؕ يُخْفُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ؕ يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ

तमाम - अल्लाह के लिए	वह छुपाते हैं	में	अपने दिल	जो	ज़ाहिर नहीं करते	आप के लिए (पर)	वह कहते हैं	अगर होता

لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ؕ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ

हमारे लिए	थोड़ा सा इख़्तियार	हम न मारे जाते	यहां	आप कह दें	अगर तुम होते	में	अपने घर (जमा)

لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ

ज़रूर निकल खड़े होते वह लोग	लिखा था	उन पर	मारा जाना	तरफ़	अपनी क़त्लगाह (जमा)	और ताकि आज़माए अल्लाह

مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ

जो	तुम्हारे सीनों में	और ताकि साफ़ कर दे	जो	में	तुम्हारे दिल	और अल्लाह	जानने वाला

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۵۴﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ۙ

सीनों वाले (दिलों के भेद)	154	बेशक	जो लोग	पीठ फेरेंगे	तुम में से	दिन	आमने सामने हुई दो जमाअ़तें

اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ؕ

दरहक़ीक़त उन को फिसला दिया	शैतान	बाज़ की वजह से	जो उन्हों ने कमाया (आमाल)	और अलबत्ता	माफ़ कर दिया अल्लाह	उन से

ع ١٦ ٧ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۵۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا

बेशक अल्लाह	बख़्शने वाला	हिल्म वाला	155	ऐ	जो लोग	ईमान वालो (ईमान लाए)	न हो जाओ

كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ اِذَا ضَرَبُوْا فِي الْاَرْضِ

उन लोगों की तरह	काफ़िर	और वह कहते हैं	अपने भाइयों को	जब	वह सफ़र करें ज़मीन (राह) में

اَوْ كَانُوْا غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا قُتِلُوْا ۚ لِيَجْعَلَ اللّٰهُ

या	जंग में हों	अगर वह होते	हमारे पास	न	वह मरते	और न मारे जाते	ताकि बना दे अल्लाह

ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ

यह - उस	हस्रत	में	उन के दिल	और अल्लाह	ज़िन्दा करता है	और मारता है

وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿۱۵۶﴾ وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

और अल्लाह	जो कुछ	तुम करते हो	देखने वाला	156	और अलबत्ता अगर	तुम मारे जाओ	में	अल्लाह की राह

اَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

या तुम मर जाओ	यक़ीनन बख़्शिश	अल्लाह (की तरफ़) से	और रहमत	बेहतर	उस से जो	वह जमा करते हैं	157

फिर उस ने तुम पर ग़म के बाद अम्न ऊंघ (की सूरत में) उतारी, एक जमाअ़त को ढाँक लिया तुम में से, और एक जमाअ़त को अपनी जान की फ़िक्र पड़ी थी, वह अल्लाह के बारे में बे हक़ीक़त गुमान करते थे जाहिलियत के गुमान, वह कहते थे क्या कोई काम कुछ हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) है? आप (स) कह दें, कि तमाम काम अल्लाह के लिए (अल्लाह के इख़्तियार में) है, वह अपने दिलों में छुपाते हैं जो आप के लिए (आप पर) ज़ाहिर नहीं करते, वह कहते हैं अगर कुछ काम हमारे लिए (हमारे इख़्तियार में) होता तो हम यहां न मारे जाते, आप कह दें अगर तुम अपने घरों में होते तो जिन पर (जिन की क़िस्मत में) मारा जाना लिखा था वह ज़रूर निकल खड़े होते अपनी क़त्लगाहों की तरफ़, ताकि अल्लाह आज़माए जो तुम्हारे सीनों में है, और ताकि साफ़ कर दे जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह दिलों के भेद खूब जानने वाला है। **(154)**

बेशक जो लोग तुम में से पीठ फेर गए जिस दिन दो जमाअ़तें आमने सामने हुईं, दरहक़ीक़त उन्हें शैतान ने फिसलाया उन के बाज़ आमाल की वजह से, और अलबत्ता अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है। **(155)**

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों की तरह न हो जाओ जो काफ़िर हुए और वह कहते हैं अपने भाइयों को जब वह सफ़र करें ज़मीन में या जंग में शरीक हों, अगर वह होते हमारे पास तो वह न मरते और न मारे जाते, ताकि अल्लाह उस को हस्रत बना दे उन के दिलों में, और अल्लाह (ही) ज़िन्दा करता है और मारता है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखने वाला है। **(156)**

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या तुम मर जाओ तो यक़ीनन बख़्शिश और रहमत है अल्लाह की तरफ़ से, (यह) उस से बेहतर है जो वह (दौलत) जमा करते हैं। **(157)**

وَلَئِنْ مُّتُّمْ اَوْ قُتِلْتُمْ لَاِلَى اللّٰهِ تُحْشَرُوْنَ ١٥٨ فَبِمَا رَحْمَةٍ

रहमत	पस - से	158	तुम इकटठे किए जाओगे	यक़ीनन अल्लाह की तरफ़	तुम मार दिए गए	या	तुम मर गए	और अगर

مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ ۚ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ

आप (स) के पास	से	तो वह मुन्तशिर हो जाते	सख़्त दिल	तुन्दख़ू	और अगर आप (स) होते	उन के लिए	नरम दिल	अल्लाह (की तरफ़) से

فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ ۚ

काम	में	और मश्वरा करें उन से	उन के लिए	और बख़्शिश मांगें	उन से (उन्हें)	आप (स) माफ़ कर दें

فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ١٥٩

159	भरोसा करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह पर	तो भरोसा करें	आप (स) इरादा कर लें	फिर जब

اِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۚ وَاِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِىْ

जो कि	वह	तो कौन?	वह तुम्हें छोड़ दे	और अगर	तुम पर	तो नहीं ग़ालिब आने वाला	अल्लाह	वह मदद करे तुम्हारी	अगर

يَنْصُرُكُمْ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ١٦٠ وَمَا كَانَ

था - है	और नहीं	160	ईमान वाले	चाहिए कि भरोसा करें	और अल्लाह पर	उस के बाद	वह तुम्हारी मदद करे

لِنَبِىٍّ اَنْ يَّغُلَّ ؕ وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ

क़ियामत के दिन	जो उस ने छुपाया	लाएगा	छुपाएगा	और जो	कि छुपाए	नबी के लिए

ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ١٦١ اَفَمَنِ اتَّبَعَ

पैरवी की	तो क्या जिस	161	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह	उस ने कमाया	जो	हर शख़्स	पूरा पाएगा	फिर

رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ

जहन्नम	और उस का ठिकाना	अल्लाह के	गुस्से के साथ	लौटा	मानिन्द - जो	अल्लाह	रज़ा (ख़ुशनूदी)

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ١٦٢ هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا

जो	देखने वाला	और अल्लाह	अल्लाह के पास	दरजे	वह - उन	162	ठिकाना	और बुरा

يَعْمَلُوْنَ ١٦٣ لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا

एक रसूल	उन में	जब भेजा	ईमान वाले (मोमिनीन)	पर	अल्लाह ने एहसान किया	अलबत्ता बेशक	163	वह करते हैं

مِّنْ اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ

किताब	और उन्हें सिखाता है	और उन्हें पाक करता है	उस की आयतें	उन पर	वह पढ़ता है	उन की जानें (उन के दरमियान)	से

وَالْحِكْمَةَ ۚ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ١٦٤ النصف

164	खुली	गुमराही	अलबत्ता - में	उस से क़ब्ल	वह थे	और बेशक	और हिक्मत

اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ

कहां से यह?	तुम कहते हो	उस से दो चंद	अलबत्ता तुम ने पहुँचाई	कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँची	क्या जब

قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ١٦٥

165	क़ादिर	शै	हर	पर	बेशक अल्लाह	तुम्हारी जानें (अपने पास)	पास	से	वह	आप कह दें

और अगर तुम मर गए या मार दिए गए तो यक़ीनन अल्लाह की तरफ़ इकटठे किए जाओगे। (158)

पस अल्लाह की रहमत (ही) से है कि आप (स) उन के लिए नरम दिल हैं, और अगर तुन्दख़ू सख़्त दिल होते तो वह आप (स) के पास से मुन्तशिर हो जाते, पस आप (स) माफ़ कर दें उन्हें और उन के लिए बख़्शिश मांगें, और काम में उन से मश्वरा कर लिया करें, फिर जब आप (स) (पुख़्ता) इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा करें, बेशक अल्लाह भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है। (159)

अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे उस के बाद, और चाहिए कि ईमान वाले अल्लाह पर भरोसा करें। (160)

और नबी के लिए (शायान) नहीं कि वह छुपाए, और जो छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज़ क़ियामत के दिन लाएगा, फिर पूरा पूरा पाएगा हर शख़्स जो उस ने कमाया (अमल किया) और वह ज़ुल्म नहीं किए जाएंगे। (161)

तो क्या जिस ने पैरवी की रज़ाए इलाही (अल्लाह की ख़ुशनूदी की) उस के मानिन्द है जो अल्लाह के गुस्से के साथ लौटा? और उस का ठिकाना जहन्नम है, और (बहुत) बुरा ठिकाना है। (162)

उन के (मुख़्तलिफ़) दरजे हैं अल्लाह के पास, और वह जो कुछ करते हैं अल्लाह देखने वाला है। (163)

बेशक अल्लाह ने ईमान वालों (मोमिनों) पर एहसान किया जब उन में एक रसूल (स) भेजा उन में से, वह उन पर उस की आयतें पढ़ता है, और उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब ओ हिक्मत सिखाता है, और बेशक वह उस से क़ब्ल अलबत्ता खुली गुमराही में थे। (164)

क्या जब तुम्हें पहुँची कोई मुसीबत, अलबत्ता तुम उस से दो चंद पहुँचा चुके थे, तुम कहते हो यह कहां से आई? आप कह दें वह तुम्हारे अपने (ही) पास से, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (165)

وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾ۙ

166	ईमान वाले	और ताकि वह मालूम कर ले	तो अल्लाह के हुक्म से	दो जमाअ़तें	मुडभेड़ हुई	दिन	तुम्हें पहुँचा	और जो

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚۖ وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا

लड़ो	आओ	उन्हें	और कहा गया	मुनाफ़िक़ हुए	वह जो कि	और ताकि जान ले

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ۭ قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ۭ

ज़रूर तुम्हारा साथ देते	जंग	अगर हम जानते	वह बोले	दिफ़ाअ़ करो	या	अल्लाह की राह	में

هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَىِٕذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ

अपने मुँह से	वह कहते हैं	ब निसबत ईमान	उन से	ज़ियादा क़रीब	उस दिन	कुफ़्र के लिए (कुफ़्र से)	वह

مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْا

उन्हों ने कहा	वह लोग जो	167	वह छुपाते हैं	जो	खूब जानने वाला	और अल्लाह	उन के दिलों में	जो नहीं

لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ۭ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ

से	तुम हटा दो	कह दीजिए	वह न मारे जाते	वह हमारी मानते	अगर	और वह बैठ रहे	अपने भाइयों के बारे में

اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٦٨﴾ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا

मारे गए	जो लोग	हरगिज़ ख़याल करो	और न	168	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	अपनी जानें

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ۭ بَلْ اَحْيَاۗءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾ۙ

169	वह रिज़्क़ दिए जाते हैं	अपना रब	पास	ज़िन्दा (जमा)	बल्कि	मुर्दा (जमा)	अल्लाह का रास्ता	में

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ

नहीं	उन की तरफ़ से जो	और खुश वक़्त हैं	अपने फ़ज़्ल से	उन्हें अल्लाह ने दिया	से-जो	खुश

وقف لازم

يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿١٧٠﴾ۘ

170	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़	यह कि नहीं	उन के पीछे	से	उन से	मिले

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ

ज़ाया नहीं करता	और यह कि अल्लाह	और फ़ज़्ल	अल्लाह	से	नेमत से	वह खुशियां मना रहे हैं

ع ١٧ / ٨

اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٧١﴾ۚۛ اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ

कि	बाद	और रसूल	अल्लाह का	क़ुबूल किया	जिन लोगों ने	171	ईमान वाले	अजर

ع ٣ ج — عند المتقدمين ١٢

اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ڔ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٢﴾ۚ

172	बड़ा	अजर	और परहेज़गारी की	उन में से	उन्हों ने नेकी की	उन के लिए जो	ज़ख़्म	पहुँचा उन्हें

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ

पस उन से डरो	तुम्हारे लिए	जमा किया है	लोग	कि	लोग	उन के लिए	कहा	वह लोग जो

فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ڰ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿١٧٣﴾

173	कारसाज़	और कैसा अच्छा	हमारे लिए काफ़ी है अल्लाह	और उन्हों ने कहा	ईमान	तो ज़ियादा हुआ उन का

और तुम्हें जो (तक्लीफ़) पहुँची जिस दिन दो जमाअ़तों में मुडभेड़ हुई तो अल्लाह के हुक्म से (पहुँची) ताकि वह मालूम कर ले ईमान वालों को। (166)

और ताकि जान ले उन लोगों को जो मुनाफ़िक़ हुए, और उन्हें कहा गयाः आओ! अल्लाह की राह में लड़ो या दिफ़ाअ़ करो, तो वह बोले अगर हम जंग जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन कुफ़्र से ज़ियादा क़रीब थे ब निसबत ईमान के, वह अपने मुँह से कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, और अल्लाह खूब जानने वाला है जो वह छुपाते हैं। (167)

वह लोग जिन्हों ने अपने भाइयों के बारे में कहा और खुद बैठ रहे अगर वह हमारी बात मानते तो वह न मारे जाते, कह दीजिए! तुम अपनी जानों से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (168)

जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें हरगिज़ ख़याल न करो मुर्दा, बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के पास से वह रिज़्क़ पाते हैं। (169)

खुश हैं उस से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया, और वह उन लोगों की तरफ़ से खुश वक़्त हैं जो नहीं मिले उन से उन के पीछे, उन पर न कोई ख़ौफ़ है और न वह ग़मगीन होंगे। (170)

वह खुशियां मना रहे हैं अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल से, और यह कि अल्लाह ज़ाया नहीं करता ईमान वालों का अजर। (171)

जिन लोगों ने अल्लाह और उस के रसूल का (हुक्म) क़ुबूल किया उस के बाद कि उन्हें ज़ख़्म पहुँचा, उन में से जिन लोगों ने नेकी और परहेज़गारी की उन के लिए बड़ा अजर है। (172)

जिन्हें लोगों ने कहा कि लोगों ने तुम्हारे (मुक़ाबले के लिए सामान) जमा कर लिया है, पस उन से डरो तो उन का ईमान ज़ियादा हुआ, और उन्हों ने कहा हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह कैसा अच्छा कारसाज़ है! (173)

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا

और उन्हों ने पैरवी की	कोई बुराई	उन्हें नहीं पहुँची	और फ़ज़्ल	अल्लाह	से	नेमत के साथ	फिर वह लौटे

رِضْوَانَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿١٧٤﴾ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ

शैतान	यह तुम्हें	इस के सिवा नहीं	174	बड़ा	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	अल्लाह की रज़ा

يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

175	ईमान वाले	तुम हो	अगर	और डरो मुझ से	उन से डरो	सो न	अपने दोस्त	डराता है

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۗ

कुछ	अल्लाह	हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे	यक़ीनन वह	कुफ़्र में	दौड़ धूप करते हैं	जो लोग	आप को ग़मगीन करें	और न

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾

176	बड़ा	अज़ाब	और उन के लिए	आख़िरत	में	कोई हिस्सा	उन को	दे	कि न	चाहता है अल्लाह

اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	कुछ	बिगाड़ सकते अल्लाह का	हरगिज़ नहीं	ईमान के बदले	कुफ़्र	उन्हों ने मोल लिया	वह लोग जो	बेशक

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ

बेहतर	उन्हें	हम ढील देते हैं	यह कि	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	हरगिज़ गुमान करें	और न	177	दर्दनाक	अज़ाब

لِّاَنْفُسِهِمْ ۭ اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾

178	ज़लील करने वाला	अज़ाब	और उन के लिए	गुनाह	ताकि वह बढ़ जाएं	उन्हें	हम ढील देते हैं	दरहक़ीक़त	उन के लिए

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى

यहां तक कि	उस पर	तुम	जो	पर	ईमान वाले	कि छोड़े	अल्लाह	नहीं है

يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ

ग़ैब	पर	कि तुम्हें ख़बर दे	अल्लाह	और नहीं है	पाक	से	नापाक	जुदा कर दे

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ

और उस के रसूल	अल्लाह पर	तो तुम ईमान लाओ	वह चाहे	जिस को	अपने रसूल	से	चुन लेता है	और लेकिन अल्लाह

وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾ وَلَا يَحْسَبَنَّ

हरगिज़ ख़याल करें	और न	179	बड़ा	अजर	तो तुम्हारे लिए	और परहेज़गारी करो	तुम ईमान लाओ	और अगर

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۭ

उन के लिए	बेहतर	वह	अपने फ़ज़्ल से	उन्हें दिया अल्लाह ने	में-जो	बुख़्ल करते हैं	जो लोग

بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۭ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ

क़ियामत	दिन	उस में	उन्हों ने बुख़्ल किया	जो	अनक़रीब तौक़ पहनाया जाएगा	उन के लिए	बुरा	वह	बल्कि

وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾ ع ١٨ ٩ ٩

180	बाख़बर	जो तुम करते हो	और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास

फिर वह लौटे अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल के साथ, उन्हें कोई बुराई न पहुँची, और उन्हों ने पैरवी की रज़ाए इलाही की, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (174)

इस के सिवा नहीं कि शैतान तुम्हें डराता है अपने दोस्तों से, सो तुम उन से न डरो और मुझ से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (175)

और आप को ग़मगीन न करें वह लोग जो कुफ़्र में दौड़ धूप करते हैं, यक़ीनन वह हरगिज़ अल्लाह का न बिगाड़ सकेंगे कुछ, अल्लाह चाहता है कि उन को आख़िरत में कोई हिस्सा न दे, और उन के लिए अज़ाब है बड़ा। (176)

बेशक जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़्र मोल लिया वह हरगिज़ नहीं बिगाड़ सकते अल्लाह का कुछ, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (177)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह हरगिज़ गुमान न करें कि हम जो उन्हें ढील दे रहे हैं यह उन के लिए बेहतर है, दरहक़ीक़त हम उन्हें ढील देते हैं ताकि वह गुनाह में बढ़ जाएं, और उन के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है। (178)

अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि ईमान वालों को (इस हाल पर) छोड़ दे जिस पर तुम हो यहां तक कि नापाक को पाक से जुदा कर दे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की ख़बर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिस को चाहे चुन लेता है, तो तुम अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी करो तो तुम्हारे लिए बड़ा अजर है। (179)

और वह लोग हरगिज़ यह ख़याल न करें जो उस (माल) में बुख़्ल करते हैं जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया कि वह बेहतर है उन के लिए, बल्कि वह उन के लिए बुरा हे, जिस (माल) में उन्हों ने बुख़्ल किया अनक़रीब क़ियामत के दिन तौक़ (बना कर) पहनाया जाएगा, और अल्लाह ही वारिस है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (180)

وقف لازم

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ

मालदार	और हम	फ़क़ीर	कि अल्लाह	कहा	जिन लोगों ने	क़ौल (बात)	अलबत्ता सुन लिया अल्लाह ने

سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ

नाहक़	नबी (जमा)	और उन का क़त्ल करना	जो उन्हों ने कहा	अब हम लिख रखेंगे

وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿١٨١﴾ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ

आगे भेजा	बदला-जो	यह	181	जलाने वाला	अ़ज़ाब	तुम चखो	और हम कहेंगे

اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿١٨٢﴾ ۚ اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا

कहा	जिन लोगों ने	182	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ

اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا

वह लाए हमारे पास	यहां तक कि	किसी रसूल पर	हम ईमान लाएं	कि न	हम से	अ़हद किया	कि अल्लाह

بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ

निशानियों के साथ	मुझ से पहले	बहुत से रसूल	अलबत्ता तुम्हारे पास आए	आप कह दें	आग	जिसे खा ले	क़ुरबानी

وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٨٣﴾

183	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम ने उन्हें क़त्ल किया	फिर क्यों	तुम कहते हो	और उस के साथ जो

فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ

वह आए	आप से पहले	बहुत से रसूल	झुटलाए गए	तो अलबत्ता	वह झुटलाएं आप (स) को	फिर अगर

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿١٨٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۭ

मौत	चखना	जान	हर	184	रौशन	और किताब	और सहीफ़े	खुली निशानियों के साथ

وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ

फिर जो	क़ियामत के दिन	तुम्हारे अजर	पूरे पूरे मिलेंगे	और बेशक

زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ

दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं	पस मुराद को पहुँचा	जन्नत	और दाख़िल किया गया	दोज़ख़	से	दूर किया गया

اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿١٨٥﴾ لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ

और अपनी जानें	अपने माल	में	तुम ज़रूर आज़माए जाओगे	185	धोका	सौदा	सिवाए

وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ

तुम से पहले	किताब दी गई	वह लोग जिन्हें	से	और ज़रूर सुनोगे

وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَذًى كَثِيْرًا ۭ

बहुत	दुख देने वाली	जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	और-से

وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٨٦﴾

186	काम (जमा)	हिम्मत	से	यह	तो बेशक	और परहेज़गारी करो	तुम सब्र करो	और अगर

अलबत्ता अल्लाह ने उन की बात सुन ली जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह फ़क़ीर है और हम मालदार हैं। अब हम लिख रखेंगे जो उन्हों ने कहा और उन का नबियों को नाहक़ क़त्ल करना, और कहेंगेः चखो जलाने वाला अ़ज़ाब। (181)

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। (182)

जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह ने हम से अ़हद कर रखा है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं यहां तक कि वह हमारे पास क़ुरबानी लाए जिसे आग खा ले, आप (स) कह दें अलबत्ता तुम्हारे पास मुझ से पहले बहुत से रसूल आए निशानियों के साथ और उस के साथ भी जो तुम कहते हो, फिर क्यों तुम ने उन्हें क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो, (183)

फिर अगर वह आप को झुटलाएं तो अलबत्ता झुटलाए गए हैं आप (स) से पहले बहुत से रसूल जो आए खुली निशानियों के साथ, और सहीफ़े और रौशन किताब (ले कर)। (184)

हर जान को मौत (का ज़ाइक़ा) चखना है, और क़ियामत के दिन तुम्हारे अजर पूरे पूरे मिलेंगे, फिर जो कोई दोज़ख़ से दूर किया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया पस वह मुराद को पहुँचा, और दुनिया की ज़िन्दगी (कुछ) नहीं एक धोके के सौदे के सिवा। (185)

तुम अपने मालों और अपनी जानों में ज़रूर आज़माए जाओगे, और तुम ज़रूर सुनोगे उन लोगों से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई और मुश्रिकों से (भी) दुख देने वाली (बातें) बहुत सी, और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी करो तो बेशक यह बड़े हिम्मत के कामों में से है। (186)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ

उसे ज़रूर बयान कर देना	किताब दी गई	वह लोग जिन्हें	अ़हद	अल्लाह ने लिया	और जब

لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ

हासिल की उस के बदले	अपनी पीठ (जमा)	पीछे	तो उन्हों ने उसे फेंक दिया	छुपाना उसे	और न	लोगों के लिए

ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	आप हरगिज़ न समझें	187	वह ख़रीदते हैं	तो कितना बुरा है जो	थोड़ी	क़ीमत

يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا

उस पर जो	उन की तारीफ़ की जाए	कि	और वह चाहते हैं	उन्हों ने किया	उस पर जो	ख़ुश होते हैं

لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ

और उन के लिए	अ़ज़ाब	से	रिहा शुदा	समझें आप उन्हें	पस न	उन्हों ने नहीं किया

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए बादशाहत	188	दर्दनाक	अ़ज़ाब

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾ اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ١٩ ع ٩ ١٠

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदाइश	में	बेशक	189	क़ादिर	हर शै	पर

وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

190	अ़क़्ल वालों के लिए	निशानियां हैं	और दिन	रात	और आना जाना

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ

अपनी करवटें	और पर	और बैठे	खड़े	याद करते हैं अल्लाह को	जो लोग

وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا

नहीं	ऐ हमारे रब	और ज़मीन	आस्मानों	पैदाइश में	और वह ग़ौर करते हैं

خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾

191	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	तू हमें बचा ले	तू पाक है	बे मक़सद	यह	तू ने पैदा किया

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों के लिए	और नहीं	तू ने उस को रुसवा किया	तो ज़रूर	आग (दोज़ख़)	दाख़िल किया	जो-जिस	बेशक तू	ऐ हमारे रब

مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾ رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىْ

पुकारता है	पुकारने वाला	सुना	बेशक हम ने	ऐ हमारे रब	192	मददगार	कोई

لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا

हमें	तो बख़्श दे	ऐ हमारे रब	सो हम ईमान लाए	अपने रब पर	कि ईमान ले आओ	ईमान के लिए

ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾

193	नेकों के साथ	और हमें मौत दे	हमारी बुराइयां	और दूर कर दे हम से	हमारे गुनाह

और (याद करो) जब अल्लाह ने अहले किताब से अ़हद लिया कि तुम उसे लोगों के लिए ज़रूर बयान करना और न उसे छुपाना, उन्हों ने उसे अपनी पीठ पीछे फेंक दिया और उस के बदले थोड़ी क़ीमत हासिल की, तो कितना बुरा है जो वह ख़रीदते हैं! (187)

आप हरगिज़ न समझें जो लोग ख़ुश होते हैं जो उन्हों ने किया (अपने किए पर) और चाहते हैं कि उस पर उन की तारीफ़ की जाए जो उन्हों ने नहीं किया, पस आप (स) उन्हें रिहा शुदा न समझें अ़ज़ाब से, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (188)

और अल्लह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और अल्लाह हर शै पर क़दिर है। (189)

बेशक पैदाइश में आस्मानों की और ज़मीन की, और रात दिन के आने जाने में अ़क़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। (190)

जो लोग अल्लाह को खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर याद करते हैं, और ग़ौर करते हैं आस्मानों की और ज़मीन की पैदाइश में, ऐ हमारे रब! तू ने यह बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है, तू बचा ले हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से। (191)

ऐ हमारे रब! तू ने जिस को दोज़ख़ में दाख़िल किया तो ज़रूर तू ने उस को रुसवा किया, और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। (192)

ऐ हमारे रब! बेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ़ पुकारता है कि अपने रब पर ईमान ले आओ, सो हम ईमान लाए, ऐ हमारे रब! तो हमें बख़्श दे हमारे गुनाह, और हम से हमारी बुराइयां दूर कर दे, और हमें नेकों के साथ मौत दे। (193)

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ

क़ियामत के दिन	और न रुसवा कर हमें	अपने रसूल (जमा)	पर (ज़रीआ)	तू ने हम से वादा किया	जो	और हमें दे	ऐ हमारे रब

اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿١٩٤﴾ فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّىْ لَاۤ اُضِيْعُ عَمَلَ

मेहनत	ज़ाया नहीं करता	कि मैं	उन का रब	उन के लिए	पस क़ुबूल की	194	वादा	नहीं ख़िलाफ़ करता	बेशक तू

عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ

बाज़ से (आपस में)	तुम में से बाज़	या औरत	मर्द से	तुम में से	कोई मेहनत करने वाला

فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِىْ سَبِيْلِىْ

मेरी राह में	और सताए गए	अपने शहरों	से	और निकाले गए	उन्हों ने हिज्रत की	सो लोग

وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ

और ज़रूर उन्हें दाख़िल करूँगा	उन की बुराइयां	उन से	मैं ज़रूर दूर करूँगा	और मारे गए	और लड़े

جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के पास (तरफ़)	से	सवाब	नहरें	उन के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात

وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾ لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	चलना फिरना	न धोका दे आप (स) को	195	सवाब	अच्छा	उस के पास	और अल्लाह

فِى الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۟ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ

दोज़ख़	उन का ठिकाना	फिर	थोड़ा	फ़ाइदा	196	शहर (जमा)	में

وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِىْ

बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	अपना रब	डरते रहे	जो लोग	लेकिन	197	बिछौना (आराम गाह)	और कितना बुरा

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ وَمَا

और जो	अल्लाह के पास	से	मेहमानी	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	से

الثلثة

عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾ وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ

बाज़ वह जो	अहले किताब	से	और बेशक	198	नेक लोगों के लिए	बेहतर	अल्लाह के पास

يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ

अल्लाह के आगे	आजिज़ी करते हैं	उन की तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	और जो	अल्लाह पर	ईमान लाते हैं

لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ

उन का अजर	उन के लिए	यही लोग	थोड़ा	मोल	अल्लाह की आयतों का	मोल नहीं लेते

عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا

तुम सब्र करो	ईमान वालो	ऐ	199	हिसाब	तेज़	बेशक अल्लाह	उन का रब	पास

ع ٢٠ ١١ ١١

وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾

200	मुराद को पहुँचो	ताकि तुम	और डरो अल्लाह से	और जंग की तैयारी करो	और मुक़ाबले में मज़बूत रहो

ऐ हमारे रब! और हमें दे जो तू ने अपने रसूलों के ज़रीए हम से वादा किया और हमें क़ियामत के दिन रुसवा न कर, बेशक तू नहीं ख़िलाफ़ करता (अपना) वादा। **(194)**

पस उन के रब ने (उन की दुआ) क़ुबूल की कि मैं किसी मेहनत करने वाले की मेहनत ज़ाया नहीं करता तुम में से मर्द हो या औरत, तुम आपस में (एक हो), सो जिन लोगों ने हिज्रत की और अपने शहरों से निकाले गए, और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए, मैं उन की बुराइयां उन से ज़रूर दूर करदूँगा और उन्हें बाग़ात में दाख़िल करूँगा, बहती हैं जिन के नीचे नहरें, (यह) अल्लाह की तरफ़ से सवाब है, और अल्लाह के पास अच्छा सवाब है। **(195)**

शहरों में काफ़िरों का चलना फिरना आप (स) को धोका न दे। **(196)**

(यह) थोड़ा सा फ़ाइदा है, फिर उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वह कितनी बुरी आराम गाह है? **(197)**

जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, मेहमानी है अल्लाह के पास से, और जो अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए बेहतर है। **(198)**

और बेशक अहले किताब में से बाज़ वह हैं जो ईमान लाए हैं अल्लाह पर और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो उन की तरफ़ नाज़िल किया गया, अल्लाह के आगे आजिज़ी करते हैं, अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ा मोल नहीं लेते, यही लोग हैं उन के लिए उन के रब के पास अजर है, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। **(199)**

ऐ ईमान वालो! तुम सब्र करो, और मुक़ाबले में मज़बूत रहो, और जंग की तैयारी करो, और अल्लाह से डरो, ताकि तुम मुराद को पहुँचो। **(200)**

آيَاتُهَا ١٧٦ ❀ (٤) سُوْرَةُ النِّسَآءِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

रुकूआत 24 | (4) सूरतुन निसा (औरतें) | आयात 176

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ

जान	से	तुम्हें पैदा किया	वह जिस ने	अपना रब	डरो	लोगो	ऐ

وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا

बहुत	मर्द (जमा)	दोनों से	और फैलाए	जोड़ा उस का	उस से	और पैदा किया	एक

وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ

और रिश्ते	उस से (उस के नाम पर)	आपस में मांगते हो	वह जो	और अल्लाह से डरो	और औरतें

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝١ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى اَمْوَالَهُمْ

उन के माल	यतीम (जमा)	और दो	1	निगहबान	तुम पर	है	बेशक अल्लाह

وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَهُمْ

उन के माल	खाओ	और न	पाक से	नापाक	बदलो	और न

اِلٰٓى اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا ۝٢ وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا

कि न	तुम डरो	और अगर	2	बड़ा	गुनाह	है	बेशक	अपने माल तरफ़ (साथ)

تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ

तुम्हें	पसन्द हो	जो	तो निकाह कर लो	यतीमों	में	इन्साफ़ कर सकोगे

مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا

इन्साफ़ कर सकोगे	कि न	तुम्हें अन्देशा हो	फिर अगर	और चार, चार	और तीन, तीन	दो, दो	औरतें	से

فَوَاحِدَةً اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَلَّا تَعُوْلُوْا ۝٣ ؕ

3	झुक पड़ो	कि न	क़रीब तर	यह	लौंडी जिस के तुम मालिक हो	जो	या	तो एक ही

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ

तुम को	खुशी से छोड़ दें	फिर अगर	खुशी से	उन के मेहर	औरतें	और दे दो

عَنْ شَىْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـًٔا مَّرِيْٓـًٔا ۝٤ وَلَا تُؤْتُوا

दो	और न	4	मज़ेदार, खुशगवार	तो उसे खाओ	दिल से	उस से	कुछ

السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِىْ جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ

और उन्हें खिलाते रहो	सहारा	तुम्हारे लिए	अल्लाह ने बनाया	जो	अपने माल	बेअ़क़्ल (जमा)

فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٥

5	मअ़रूफ़	बात	उन से	और कहो	और उन्हें पहनाते रहो	उस में

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान (आदम अ़) से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से फैलाए बहुत से मर्द और औ़रतें, और अल्लाह से डरो जिस के नाम पर तुम आपस में मांगते हो और (ख़याल रखो) रिश्तों का, बेशक अल्लाह है तुम पर निगहबान। (1)

और यतीमों को उन के माल दो और न बदलो नापाक (हराम) को पाक (हलाल) से, और उन के माल न खाओ अपने मालों के साथ (मिला कर), बेशक यह बड़ा गुनाह है। (2)

और अगर तुम को डर हो कि यतीम (के हक़) में इन्साफ़ न कर सकोगे तो निकाह कर लो जो औ़रतें तुम्हें भली लगें, दो दो और तीन तीन और चार चार, फिर अगर तुम्हें अन्देशा हो कि इन्साफ़ न कर सकोगे तो एक ही, या जिस लौंडी के तुम मालिक हो, यह उस के क़रीब है कि न झुक पड़ोगे। (3)

और औ़रतों को उन के मेहर ख़ुशी से दे दो, फिर अगर वह ख़ुशी से तुम्हें छोड़ दें उस में से कुछ तो उसे मज़ेदार ख़ुशगवार समझ कर खाओ। (4)

और न दो बेअ़क़्लों को अपने माल जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए सहारा (गुज़रान का ज़रीआ़) बनाया है और उन्हें उस से खिलाते और पहनाते रहो, और कहो उन से मअ़रूफ़ बात। (5)

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰٓى اِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ

तुम पाओ	फिर अगर	निकाह	वह पहुँचें	जब	यहां तक कि	यतीम (जमा)	और आज़माते रहो

مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا تَاْكُلُوْهَآ

वह खाओ	और न	उन के माल	उन के	तो हवाले कर दो	सलाहियत	उन में

اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا

ग़नी	हो	और जो	वह बड़े हो जाएंगे	कि	और जल्दी जल्दी	ज़रूरत से ज़ियादा

فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ

दस्तूर के मुताबिक़	तो खाए	हाजत मन्द	हो	और जो	बचता रहे

فَاِذَا دَفَعْتُمْ اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	तो गवाह कर लो	उन के माल	उन के	हवाले करो	फिर जब

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝٦ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ

छोड़ा	उस से जो	हिस्सा	मर्दों के लिए	6	हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफ़ी

الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا

उस से जो	हिस्सा	और औरतों के लिए	और क़रावतदार	माँ बाप

تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ اَوْ كَثُرَ ۭ

ज़ियादा	या	उस से	थोड़ा	उस में से	और क़रावतदार	माँ बाप	छोड़ा

نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝٧ وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ

तक़सीम के वक़्त	हाज़िर हों	और जब	7	मुक़र्रर किया हुआ	हिस्सा

اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ

उस से	तो उन्हें खिला दो (दे दो)	और मिस्कीन	और यतीम	रिश्तेदार

وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٨ وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ

वह लोग	और चाहिए कि डरें	8	अच्छी	बात	उन से	और कहो

لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا

उन्हें फ़िक्र हो	नातवां	औलाद	अपने पीछे	से	छोड़ जाएं	अगर

عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝٩

9	सीधी	बात	और चाहिए कि कहें	पस चाहिए कि वह डरें अल्लाह से	उन का

اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا

उस के सिवा कुछ नहीं	ज़ुल्म से	यतीमों	माल	खाते हैं	जो लोग	बेशक

ع ١٠ ١٢ يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝١٠

10	आग (दोज़ख़)	और अनक़रीब दाख़िल होंगे	आग	अपने पेट	में	वह भर रहे हैं

और यतीमों को आज़माते रहो यहां तक कि वह निकाह की उम्र को पहुँच जाएं, फिर अगर उन में सलाहियत (हुस्ने तदबीर) पाओ तो उन के माल उन के हवाले कर दो, और उन का माल न खाओ ज़रूरत से ज़ियादा और जल्दी (इस ख़याल से) कि वह बड़े हो जाएंगे, और जो ग़नी हो वह (माले यतीम से) बचता रहे, और जो हाजत मन्द हो वह दस्तूर के मुताबिक़ खाए, फिर जब उन के माल उन के हवाले करो तो उन पर गवाह कर लो, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (6)

मर्दों के लिए हिस्सा है उस में से जो माँ बाप ने और क़रावतदारों ने छोड़ा, और औरतों के लिए हिस्सा है उस में से जो छोड़ा माँ बाप ने और क़रावतदारों ने, ख़ाह थोड़ा हो या ज़ियादा, हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है। (7)

और जब हाज़िर हों तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मिस्कीन तो उस में से उन्हें भी (कुछ) दे दो और कहो उन से अच्छी बात। (8)

और चाहिए कि वह लोग डरें कि अगर वह छोड़ जाएं अपने पीछे नातवां औलाद तो उन्हें उन के तअ़ल्लुक़ से कैसा कुछ डर होता, पस चाहिए कि वह अल्लाह से डरें और चाहिए कि बात कहें सीधी। (9)

बेशक जो लोग ज़ुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, कुछ नहीं बस वह अपने पेटों में आग भर रहे हैं, और अ़नक़रीब दोज़ख़ में दाख़िल होंगे। (10)

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۗ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ فَاِنْ كُنَّ

हों	फिर अगर	दो औरतें	हिस्सा	मानिंद (बराबर)	मर्द को	तुम्हारी औलाद	में	तुम्हें वसीयत करता है अल्लाह

نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا

तो उस के लिए	एक	हो	और अगर	जो छोड़ा (तरका)	दो तिहाई (2/3)	तो उन के लिए	दो	ज़ियादा	औरतें

النِّصْفُ ۭ وَلِاَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ اِنْ كَانَ

अगर हो	छोड़ा (तरका)	उस से जो	छटा हिस्सा (1/6)	उन दोनों में से	हर एक के लिए	और माँ बाप के लिए	निस्फ़ (1/2)

لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ اَبَوٰهُ فَلِاُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ

तिहाई (1/3)	तो उस की माँ का	माँ बाप	और उस के वारिस हों	उस की औलाद	न हो	फिर अगर	उस की औलाद

فَاِنْ كَانَ لَهٗٓ اِخْوَةٌ فَلِاُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

वसीयत	बाद	से	छटा (1/6)	तो उस की माँ का	कई भाई बहन	उस के हों	फिर अगर

يُّوْصِيْ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۭ اٰبَاۗؤُكُمْ وَاَبْنَاۗؤُكُمْ ۚ لَا تَدْرُوْنَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ لَكُمْ

नज़दीक तर तुम्हारे लिए	उन में से कौन	तुम को नहीं मालूम	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप	या क़र्ज़	उस की वसीयत की हो

نَفْعًا ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١١﴾

11	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह का	हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है	नफ़ा

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ اَزْوَاجُكُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَ

हो	फिर अगर	उन की कोई औलाद	न हो	अगर	तुम्हारी बीवियां	जो छोड़ मरें	आधा (1/2)	और तुम्हारे लिए

لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ

उस की	वह वसीयत कर जाएं	वसीयत	बाद	उस में से जो वह छोड़ें	चौथाई (1/4)	तो तुम्हारे लिए	उन की औलाद

اَوْ دَيْنٍ ۭ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَاِنْ

फिर अगर	तुम्हारी औलाद	न हो	अगर	तुम छोड़ जाओ	उस में से जो	चौथाई (1/4)	और उन के लिए	या क़र्ज़

كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ

वसीयत	बाद	से	उस में से जो तुम छोड़ जाओ	आठवां (1/8)	तो उन के लिए	औलाद	हो तुम्हारी

تُوْصُوْنَ بِهَآ اَوْ دَيْنٍ ۭ وَاِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً اَوِ امْرَاَةٌ

या औरत	जिस का बाप बेटा न हो	मीरास हो	ऐसा मर्द	हो	और अगर	या क़र्ज़	उस की	तुम वसीयत करो

وَّلَهٗٓ اَخٌ اَوْ اُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَاِنْ كَانُوْٓا اَكْثَرَ

ज़ियादा	हों	फिर अगर	छटा (1/6)	उन में से हर एक	तो तमाम के लिए	या बहन	भाई	और उस

مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاۗءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ

जिस की वसीयत की जाए	वसीयत	उस के बाद	तिहाई (1/3) में	शरीक	तो वह सब	उस से (एक से)

اَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَاۗرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿١٢﴾

12	हिल्म वाला	जानने वाला	और अल्लाह	अल्लाह से	हुक्म	नुक़्सान दह न हो	या क़र्ज़

अल्लाह तुम्हें वसीयत करता है तुम्हारी औलाद (के बारे) में, मर्द का हिस्सा दो औ़रतों के बराबर है, फिर अगर औरतें हों दो से ज़ियादा तो उन के लिए (उस में से) दो तिहाई है जो (वारिस ने) छोड़ा, और अगर एक ही हो तो उस के लिए निस्फ़ है, और उस के माँ बाप के लिए दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है उस में से जो (मय्यत ने) छोड़ा अगर उस की औलाद हो। फिर अगर उस की औलाद न हो और माँ बाप ही उस के वारिस हों तो उस की माँ का तिहाई हिस्सा है, फिर अगर उस (मय्यत) के कई भाई बहन हों तो उस की माँ का छटा हिस्सा है उस वसीयत के बाद जो वह कर गया या (बाद अदाए) क़र्ज़, तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे तो तुम को नहीं मालूम उन में से कौन तुम्हारे लिए नफ़ा (पहुँचाने में) नज़दीक तर है, यह अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ हिस्सा है, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। **(11)**

और तुम्हारे लिए आधा है जो छोड़ मरें तुम्हारी बीवियां अगर उन की कोई औलाद न हो, फिर अगर उन की औलाद हो तो तुम्हारे लिए उस में से जो वह छोड़ें चौथाई हिस्सा है वसीयत के बाद जिस की वह वसीयत कर जाएं या (बाद अदाए) क़र्ज़, और उस में से उन के लिए चौथाई हिस्सा है जो तुम छोड़ जाओ अगर न हो तुम्हारी औलाद, फिर अगर तुम्हारी औलाद हो तो जो तुम छोड़ जाओ उस में से उन का आठवां (1/8) हिस्सा है उस वसीयत (के निकालने) के बाद जो तुम वसीयत कर जाओ या (अदाए) क़र्ज़, और अगर ऐसे मर्द की मीरास है या ऐसी औ़रत की जो "कलाला" है (उस का बाप बेटा नहीं) और उस के भाई बहन हों तो उन दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा है, फिर अगर वह एक से ज़ियादा हों तो वह सब शरीक हैं एक तिहाई में उस वसीयत के बाद जो वसीयत कर दी जाए या (बाद अदाए) क़र्ज़ (बशर्ते यह कि किसी को) नुक़्सान न पहुँचाया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, और अल्लाह जानने वाला, हिल्म वाला है। **(12)**

ع ٢ ١٣

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ

बाग़ात	वह उसे दाख़िल करेगा	और उस का रसूल	अल्लाह की इताअ़त करे	और जो	अल्लाह की (मुक़र्रर कर दह) हदें	यह

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ

कामयाबी	और यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

الْعَظِيْمُ ﴿١٣﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ

उस की हदें	और बढ़ जाए	और उस का रसूल	अल्लाह	नाफ़रमानी करे	और जो	13	बड़ी

يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۠ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٤﴾ وَالّٰتِيْ

और जो औ़रतें	14	ज़लील करने वाला	अ़ज़ाब	और उस के लिए	उस में	हमेशा रहेगा	आग	वह उसे दाख़िल करेगा

يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَاۗىِٕكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ

उन पर	तो गवाह लाओ	तुम्हारी औ़रतें	से	बदकारी	मुर्तकिब हों

اَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ

घरों में	उन्हें बन्द रखो	वह गवाही दें	फिर अगर	अपनों में से	चार

حَتّٰى يَتَوَفّٰىهُنَّ الْمَوْتُ اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ﴿١٥﴾

15	कोई सबील	उन के लिए	कर दे अल्लाह	या	मौत	उन्हें उठा ले	यहां तक कि

وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا

और इस्लाह कर लें	फिर अगर वह तौबा करें	तो उन्हें ईज़ा दो	तुम में से	मुर्तकिब हों	और जो दो

فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿١٦﴾

16	निहायत मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	है	बेशक अल्लाह	उन का	तो पीछा छोड़ दो

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَي اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْۗءَ بِجَهَالَةٍ

नादानी से	बुराई	वह करते हैं	उन लोगों के लिए	अल्लाह पर (अल्लाह के ज़िम्मे)	तौबा क़ुबूल करना	उस के सिवा नहीं

ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰۗىِٕكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ

तौबा क़ुबूल करता है अल्लाह	पस यही लोग हैं	जल्दी से	तौबा करते हैं	फिर

عَلَيْهِمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ

तौबा	और नहीं	17	हिक्मत वाला	जानने वाला	और है अल्लाह	उन की

لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ

उन में से किसी को	सामने आ जाए	जब	यहां तक	बुराइयां	वह करते हैं	उन के लिए (उन की)

الْمَوْتُ قَالَ اِنِّىْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ

मर जाते हैं	वह लोग जो	और न	अब	तौबा करता हूँ	कि मैं	कहे	मौत

وَهُمْ كُفَّارٌ ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٨﴾

18	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	हम ने तैयार किया	यही लोग	काफ़िर	और वह

यह अल्लाह की (मुक़र्रर करदा) हदें हैं, और जो अल्लाह और उस के रसूल की इताअ़त करेगा वह उसे बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और यह बड़ी कामयाबी है। (13)

और जो अल्लाह और उस के रसूल की नाफ़रमानी करेगा और बढ़ जाएगा उस की हदों से तो वह उसे आग में दाख़िल करेगा, वह उस में हमेशा रहेंगे, और उन के लिए ज़लील करने वाला अ़ज़ाब है। (14)

और तुम्हारी औ़रतों में से जो बदकारी की मुर्तकिब हों उन पर गवाह लाओ चार अपनों में से, फिर अगर वह गवाही दें तो उन औ़रतों को घरों में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन्हें उठा ले या अल्लाह उन के लिए कोई सबील कर दे (कोई राह निकाले)। (15)

और जो दो मुर्तकिब हों तुम में से तो उन्हें ईज़ा दो, फिर अगर वह तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो उन का पीछा छोड़ दो, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला निहायत मेहरबान है। (16)

इस के सिवा नहीं कि तौबा क़ुबूल करना अल्लाह के ज़िम्मे उन ही लोगों के लिए है जो करते हैं बुराई नादानी से, फिर जल्दी से तौबा कर लेते हैं, पस यही लोग हैं अल्लाह तौबा क़ुबूल करता है उन की, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (17)

और उन लोगों के लिए तौबा नहीं जो बुराइयां (गुनाह) करते रहते हैं यहां तक कि जब मौत उन में से किसी के सामने आ जाए तो कहे कि मैं अब तौबा करता हूँ और न उन लोगों की जो मर जाते हैं हालते कुफ़्र में, यही लोग हैं हम ने तैयार किया है उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब। (18)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे लिए हलाल नहीं कि तुम वारिस बन जाओ औ़रतों के ज़बरदस्ती, और न उन्हें रोके रखो कि उन से अपना दिया हुआ कुछ (वापस) ले लो मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुर्तकिब हों, और उन औ़रतों के साथ दस्तूर के मुताबिक़ गुज़रान करो, फिर अगर वह तुम्हें नापसन्द हों तो ऐ़न मुमकिन है कि तुम्हें एक चीज़ नापसन्द हो और अल्लाह रखे उस में बहुत भलाई। **(19)**

और अगर बदल लेना चाहो एक बीवी की जगह दूसरी बीवी, और तुम ने उन में से किसी एक को ख़ज़ाना दिया है तो उस से कुछ वापस न लो, क्या तुम वह लेते हो बुहतान (लगा कर) और सरीह (खुले) गुनाह से? **(20)**

और तुम वह कैसे वापस लोगे? और अलबत्ता तुम में से एक दूसरे तक पहुँच चुका (सुहबत कर चुका), और उन्हों ने तुम से पुख़्ता अ़हद लिया। **(21)**

और उन औ़रतों से निकाह न करो जिन से तुम्हारे बाप ने निकाह किया हो मगर जो (पहले) गुज़र चुका, बेशक यह बेहयाई और ग़ज़ब की बात थी और बुरा रास्ता (ग़लत तरीक़ा) था। **(22)**

तुम पर हराम की गईं तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियां और तुम्हारी बहनें, और तुम्हारी फूफियां और तुम्हारी ख़ालाएं, और भतीजियां और बेटियां बहन की (भांजियां), और तुम्हारी रज़ाई माएँ जिन्हों ने तुम्हें दूध पिलाया और तुम्हारी दूध शरीक बहनें, और तुम्हारी औ़रतों की माएँ (सास), और तुम्हारी वह बेटियां जो तुम्हारी पर्वरिश में हैं तुम्हारी उन बीवियों से जिन से तुम ने सुहबत की, पस अगर तुम ने उन से सुहबत नहीं की तो कुछ गुनाह नहीं है तुम पर, और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां जो तुम्हारी पुश्त से हैं, और यह कि तुम दो बहनों को जमा करो मगर जो पहले गुज़र चुका, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। **(23)**

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ۭ وَلَا

और न	ज़बरदस्ती	औ़रतें	कि वारिस बन जाओ	तुम्हारे लिए	हलाल नहीं	जो लोग ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ

تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ

मुर्तकिब हों	यह कि	मगर	उन को दिया हो	जो	कुछ	कि ले लो	उन्हें रोके रखो

بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ

वह नापसन्द हों	फिर अगर	दस्तूर के मुताबिक़	और उन से गुज़रान करो	खुली हुई	बेहयाई

فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـــًٔا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ﴿١٩﴾

19	बहुत	भलाई	उस में	और रखे अल्लाह	एक चीज़	कि तुम को नापसन्द हो	तो मुमकिन है

وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا

ख़ज़ाना	उन में से एक को	और तुम ने दिया है	दूसरी बीवी	जगह (बदले)	एक बीवी	बदल लेना	तुम चाहो	और अगर

فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـــًٔا ۭ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٢٠﴾

20	सरीह (खुला)	और गुनाह	बुहतान	क्या तुम वह लेते हो	कुछ	उस से	तो न (वापस) लो

وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ

तुम से	और उन्हों ने लिया	दूसरे तक	तुम में एक	पहुँच चुका	और अलबत्ता	तुम उसे लोगे	और कैसे

مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿٢١﴾ وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ اِلَّا

मगर	औ़रतें	से	तुम्हारे बाप	जिस से निकाह किया	निकाह करो	और न	21	पुख़्ता	अ़हद

مَا قَدْ سَلَفَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۭ وَسَآءَ سَبِيْلًا ﴿٢٢﴾ۧ حُرِّمَتْ ع ٣ ٨ ١٢

हराम की गईं	22	रास्ता (तरीक़ा)	और बुरा	और ग़ज़ब की बात	बेहयाई	था	बेशक वह	जो गुज़र चुका

عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْاَخِ

और भतीजियां	और तुम्हारी ख़ालाएं	और तुम्हारी फूफियां	और तुम्हारी बहनें	और तुम्हारी बेटियां	तुम्हारी माएँ	तुम पर

وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ

दूध शरीक	से	और तुम्हारी बहनें	तुम्हें दूध पिलाया	वह जिन्हों ने	और तुम्हारी माएँ	और बहन कि बेटियां

وَاُمَّهٰتُ نِسَآىِٕكُمْ وَرَبَاۗىِٕبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآىِٕكُمُ الّٰتِيْ

जिन से	तुम्हारी बीवियां	से	तुम्हारी पर्वरिश	में	जो कि	और तुम्हारी बेटियां	और तुम्हारी औ़रतों की माएँ

دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ۡ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۡ

तुम पर	तो नहीं गुनाह	उन से	तुम ने नहीं की सुहबत	पस अगर	उन से	तुम ने सुहबत की

وَحَلَاۗىِٕلُ اَبْنَاۗىِٕكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ

दो बहनों को	तुम जमा करो	और यह कि	तुम्हारी पुश्त	से	जो	तुम्हारे बेटे	और बीवियां

اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٣﴾ۙ

23	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	पहले गुज़र चुका	मगर जो